Bodhi-Path Year 2021 January Issue Volume 20 Page No 40-47

अनगारिक धम्मपाल: आधुनिक भारत में बौद्ध-पुनर्जागरण के पुरोधा

मुकेश मेहता
पीएच.डी. शोधार्थी
पालि एवं बौद्ध-अध्ययन विभाग
बी.एच.यू., वाराणसी-221005
mehtabhu18@gmail.com

विषय-प्रवेश :

प्रथम द्वेवाचिक उपासक तपस्सु एवं भल्लिक नें उरुवेला (बोधगया) में बुद्ध के समक्ष 'धम्मं शरणं गच्छामि'[1] कहते हुए जिस धम्म की शरण ली थी तथा बुद्ध नें इसिपत्तन (सारनाथ) में 'धम्मचक्कपवत्तन'[2] करते हुए जिस सधम्म की स्थापना की थी सामान्यतः उसे ही हम बौद्ध-धम्म अथवा बौद्ध-धर्म के नाम से जानते हैं। तत्कालीन उत्तर-वैदिक भारतीय समाज में व्याप्त कर्मकांडो, आडम्बरों, लैंगिक एवं वर्णगत भेदभावों के विरोध के रूप में बौद्ध-धम्म के उदय को छठी शताब्दी ईसा-पूर्व में भारत के धार्मिक इतिहास में घटित एक अभूतपूर्व और क्रान्तिकारी घटना के तौर पर देखा जाता है। इस काल में सम्पूर्ण भारतवर्ष 16 स्वतंत्र राज्यों के रूप में विस्तारित था। इन स्वतंत्र राज्यों को महाजनपद कहा जाता था। अंङ्गुत्तरनिकाय के महावग्ग में जिन 16 महाजनपदों का उल्लेख आता है[3] उनमें से 14 मज्झ-देस (मध्य-देश) में आते थे। इन मध्यदेशीय जनपदों का विस्तार पूर्व में राजमहल की पहाड़ियों से लेकर पश्चिम में कुरुक्षेत्र तक और उत्तर में हिमालय की तराई-क्षेत्रों से लेकर दक्षिण में विन्ध्य के पर्वतीय-क्षेत्र तक था। राजकीय संरक्षण और प्रोत्साहन के फलस्वरूप मध्य-देश में बौद्ध-धम्म खूब फला-फूला और भारत के धार्मिक इतिहास में एक विशिष्ट एवं लोकप्रिय धर्म के रूप में गौरवान्वित हुआ। अपनी सहिष्णु प्रवृत्ति के कारण इसकी लोकप्रियता इतनी शीघ्रता से फैली कि जल्द ही यह विश्व के एक प्रमुख धर्म के रूप में स्थापित हो गया।

---

[1] कश्यप, जगदीश. (सं.). (1956). *महावग्गपालि* (पृ. 6). बिहार: पालि प्रकाशन मण्डल.

[2] वही (पृ. 15).

[3] Morris, R. (Ed.). (1885). *Aṁguttara Nikāya* (Vol. I, pp. 212-213). London: Pāḷi Text Society.

अगर वर्तमान समय से गणना करें तो भारत में बौद्ध-धम्म का इतिहास लगभग 2600 वर्ष प्राचीन ठहरता है। भारतीय बौद्ध-धम्म के ढाई सहस्त्राब्दियों का यह सफ़र बेहद चुनौतीपूर्ण रहा है। संघ-भेद की शुरुआत तो द्वितीय-संगीति अर्थात महापरिनिब्बान के प्रथम शताब्दी बाद से ही हो चुकी थी।[4] कालान्तर में तो उपयुक्त राजनैतिक संरक्षण एवं जन-जागरूकता के अभाव तथा कई अन्य प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण यह अपनी ही जन्मभूमि से लुप्तप्राय हो चला था। प्राचीन बौद्ध-धम्म के लगभग एक हजार वर्षों (महाजनपद काल से हर्ष काल तक) के इतिहास पर नज़र डालने पर पता चलता है कि भारत में जिस तेजी से इसका उत्थान हुआ था उसी तेजी से पतन (ह्रास) भी हुआ। हालांकि के.एल. हाजरा बौद्ध-धम्म की लोकप्रियता में हुए इस ह्रास के लिए 'पतन' अथवा 'विलुप्ति' शब्द का प्रयोग उचित नहीं मानते। उनका मत है कि जिसे हम बौद्ध-धम्म के ह्रास अथवा पतन के रूप में परिभाषित करते हैं वह दरअसल बौद्ध-धम्म का वैदिक-धर्म अथवा हिन्दू-धर्म में क्रमिक एवं सुनियोजित विलय की प्रक्रिया थी।[5] एल.एम. जोशी, आर.सी. मित्रा एवं सी. इलियट आदि विद्वान भी इस बात पर एकमत नज़र आते हैं कि हिन्दू-धर्म नें बगैर किसी संकोच-संशय के बड़े ही सुनियोजित तरीके से बौद्ध-विचारों एवं सिद्धान्तों को आत्मसात किया तथा तत्कालीन (पूर्व-मध्यकालीन एवं मध्यकालीन) पुराणकारों, संहिताकारों, साहित्यकारों नें बौद्ध-धम्म (विशेषकर महायान) एवं हिन्दू-धर्म के देवी-देवताओं में समानता दर्शाकर या किसी प्रकार का सम्बन्ध स्थापित कर बौद्ध-धम्म को हिन्दू-धर्म का ही एक रूप साबित करने का हरसम्भव प्रयास किया और इस प्रयास में वे बहुत हद तक सफल भी हुए। छठी-सदी के उत्तरार्द्ध से गौतम-बुद्ध को विष्णु के अवतार के रूप में स्थापित करने की कोशिश शुरू हो चुकी थी। पूर्व-मध्यकाल के कुछ प्रमुख वैदिक ग्रन्थों जैसे- मत्स्यपुराण, गरुड़पुराण, भागवतपुराण, ब्रह्मपुराण, दशावतारचरित, वृहत्संहिता, मेरुतंत्र, तारातंत्र आदि तथा 12वीं सदी की रचना गीतगोविन्द में बुद्ध को विष्णु के अवतार के रूप में दिखाया गया है।

के.एल. हाजरा इस 'क्रमिक एवं सुनियोजित विलय' की बात करते हुए शायद यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि जिस प्रकार से बड़े पैमाने पर बौद्ध-धम्म को हिन्दू-धर्म के साथ

---

[4] Oldenberg, H. (Ed.). (1879). *The Dīpavaṁsa: An Ancient Buddhist Historical Record* (p. 36). London: Williams and Norgate.

[5] Hazra, K. (1998). *The Rise and Decline of Buddhism in India* (p. 399). New Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd.

सम्बद्ध करने की कोशिश की जा रही थी तथा थेरवाद बौद्ध-धम्म के अलावे बौद्ध-धम्म के अन्य सम्प्रदायों (महायान, वज्रयान, तंत्रयान आदि) में जिस प्रकार से कर्मकांडों, आडम्बरों, अन्धविश्वासों को बढ़ावा मिल रहा था और जिस तेजी के साथ इन सम्प्रदायों का प्रसार हो रहा था इससे थेरवाद बौद्ध-धम्म के अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा। छठी-सातवीं सदी के उपरान्त से भारत में थेरवाद बौद्ध-धम्म को पल्लवित-पुष्पित होने के लिए पर्याप्त राजाश्रय मिलना भी लगभग समाप्त हो चुका था। इसका एक बड़ा प्रमाण यह है कि इस काल का एक महान सम्राट हर्षवर्धन पूर्व में थेरवादी था परंतु बाद में महायानी हो गया था। 12वीं और 13वीं सदी आते-आते तो परिस्थिति ऐसी हो चुकी थी कि बौद्ध-धम्म अपनी ही जन्मभूमि में अपना अस्तित्व अथवा मूल-स्वरूप लगभग खो चुका था।[6] यहाँ एक बात स्पष्ट होना आवश्यक है कि भारत में उदय, ह्रास एवं पुनर्जागरण के सन्दर्भ में सामान्यतः बौद्ध-धम्म का जो सम्प्रदाय परिलक्षित होता है वह थेरवाद ही है। अतः इसमें संशय का कोई अवकाश नहीं होना चाहिए कि आधुनिक भारत में बौद्ध-धम्म के पुनर्जागरण से अभिप्राय थेरवाद बौद्ध-धम्म के पुनर्जागरण से है।

19वीं सदी के शुरुआत (अर्थात जेम्स प्रिन्सेप और एलेक्जेन्डर कनिंघम की पुरातात्विक खोजों से पूर्व) तक चटगाँव और हिमालय के कुछेक क्षेत्रों को छोड़कर शेष भारत में शायद ही कहीं बौद्ध-धम्म अस्तित्व में रहा हो।[7] हालांकि 18वीं सदी ई. के उत्तरार्द्ध से ब्रिटिश पुरातत्वविदों तथा लोकसेवकों के द्वारा भारत के विभिन्न भागों से बौद्ध-धम्म से सम्बन्धित शिला-लेखों, स्तम्भ-लेखों, मूर्तियों-विहारों आदि के भग्नावशेषों की निरंतर खोज[8] से इस बात का संकेत मिल चुका था कि जिस प्रकार घने बादलों के छँटने पर संसार सूर्य के प्रकाश से पुनः आलोकित हो उठता है तथा ग्रीष्म की भीषण ज्वाला के प्रकोप से सूख चुकी नदी बरसात आने पर पुनः परिपूरित होकर अपनी पूर्वस्थिति को प्राप्त होती है उसी प्रकार प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण भारत में अपने अस्तित्व को लगभग खो चुका बौद्ध-धम्म भी शीघ्र ही अपनी पूर्ववत गौरवशाली एवं गरिमामयी स्थिति को प्राप्त होगा। आधुनिक भारत में बौद्ध-धम्म के पुनर्जागरण हेतु अबतक जितने भी प्रयास हुए हैं या हो रहे हैं उनका मुख्य उद्देश्य कहीं-न-कहीं उसी गौरवशाली एवं गरिमामयी इतिहास तथा

---

[6] ibid (pp. 401-407).

[7] सांकृत्यायन, रा. (1963). *पालि साहित्य का इतिहास (बौद्ध-साहित्य को राहुल जी की देन, कमला सांकृत्यायन)* (p. 1). लखनऊ: हिंदी समिति (सूचना विभाग).

[8] Murthy, R., & Nagarajan, M. (Eds.). (1998). *Buddhism in Tamilanadu: Collected Papers* (p. 401). Chennai: Institute of Asian Studies.

समावेशी-संस्कृति को पुनर्स्थापित करना ही रहा है। आधुनिक भारत में बौद्ध-पुनर्जागरण में समाज के शिक्षित-दीक्षित एवं अगड़े-पिछड़े हर तबके का योगदान रहा है। इस पुनर्जागरण में विद्वानों, बौद्ध-भिक्खुओं तथा विभिन्न संस्थाओं नें तो महती भूमिका निभाई ही है साथ ही इसमें परतंत्र एवं स्वतंत्र भारत में समय-समय पर हुए विभिन्न समाजिक-धार्मिक आन्दोलनों का योगदान भी कम महत्वपूर्ण नहीं रहा है। यद्यपि आधुनिक भारत में बौद्ध-पुनर्जागरण में समाज के विभिन्न लोगों, अंगों एवं इकाईयों की विशेष भूमिका को किसी भी सूरत में नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता तथापि इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि *'देवमित्त अनगारिक धम्मपाल'* (1864-1933) इस पुनर्जागरण के पुरोधा रहे हैं।

भारत में बौद्ध-पुनर्जागरण हेतु अनगारिक-धम्मपाल के प्रमुख कार्य :

ऐसे दौर में, जबकि भारत में बौद्ध-धम्म का अस्तित्व गहरे संकट में था, *अनगारिक धम्मपाल* संकटमोचन बन कर उभरे। श्रीलंका के एक बौद्ध परिवार में *डॉन डेविड हेवविथरन* के रूप में जन्में धम्मपाल नें लगभग 20 वर्ष की अवस्था में ही गृह-त्याग कर दिया[9] और इस कारण वे अनगारिक कहलाए। अनगारिक का शाब्दिक अर्थ होता है, ऐसा व्यक्ति जिसका कोई घर न हो।[10] परन्तु सही मायने में देखा जाए तो सम्पूर्ण जगत ही धम्मपाल का घर था। शान्ति एवं सहिष्णुता के पर्याय बौद्ध-धम्म के लिए उनके समर्पण नें उन्हें अपने-पराए के भेद से परे कर दिया था। इसमें कोई दो राय नहीं कि अनगारिक धम्मपाल बौद्ध-पुनर्जागरण के सर्वश्रेष्ठ प्रणेता थे। धम्मपाल एक कुशल वक्ता थे और वे हर प्रकार के लोगों के साथ सहज ही संचार स्थापित कर लेते थे। अपनी इन्हीं खूबियों के कारण वे भारतीय बौद्ध-पुनर्जागरण के मुद्दे को न सिर्फ श्रीलंका और भारत बल्कि ब्रिटेन, जापान और अमेरिका एवं अन्य यूरोपीय देशों के जनमानस के

---

[9] Sangharakshita, B., & Kirthisinghe, B. (2011). *Great Sayings of Anagarika Dharmapala* (BPS Online Edition ©2011 ed.) (p. 3). Sri Lanka: Buddhist Publication Society. Retrieved March 16, 2019, from http://what-buddha-said.net/library/Wheels/wh_070.pdf.

[10] Lahiri, N., & Singh, U. (Eds.). (2016). *Buddhism in Asia: Revival and Reinvention* (p. 391). New Delhi: Manoharlal Publishers and Distributors.

बीच भी सहजता के साथ रख पाने में सफल हुए।[11] बौद्ध-धम्म के चार महातीर्थों में से दो (बोधगया और सारनाथ) को पुनर्जीवित करने का पूरा श्रेय धम्मपाल को ही जाता है।

उन्होंने बोधगया पर बौद्धों का अधिकार दिलाने के लिए एक लंबा संघर्ष किया। इस हेतु उन्होंने 1891 ई. में कोलम्बो में स्थापित महाबोधि-सोसायटी[12] के कार्यालय को 1892 ई. में भारत (कलकत्ता) में स्थानान्तरित किया। महाबोधि-सोसायटी का प्रमुख उद्देश्य महाबोधि मन्दिर पर बौद्धों का अधिकार वापस दिलाना था।[13] इसके लिए सोसायटी नें एक लम्बी कानूनी लड़ाई लड़ी और अंततः सन 1949 में (अनगारिक धम्मपाल के निधन के 16 साल बाद) महाबोधि-मन्दिर के प्रबंधन का जिम्मा आंशिक[14] रूप से महाबोधि-सोसायटी को मिलने के साथ ही इस लड़ाई की जीत हुई। भारत में बौद्ध पुरा-स्थलों के पुनरोद्धार एवं बौद्ध विहारों के नवनिर्माण में अनगारिक धम्मपाल की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। सारनाथ के प्रसिद्ध *मूलगन्ध कुटि विहार* की स्थापना भी उनके ही द्वारा की गई। धम्मपाल नें न सिर्फ महाबोधि मन्दिर पर बल्कि सारनाथ पर भी बौद्धों के अधिकार के लिए लम्बा संघर्ष किया और 11 नवम्बर 1931 को सारनाथ में मूलगन्ध कुटी विहार की स्थापना के साथ ही उनका ये सपना उनके जीते जी ही पूरा भी हो गया। इस ऐतिहासिक मौके पर वर्किंग कॉंग्रेस कमेटी की तरफ से जवाहरलाल नेहरू भी अपनी पत्नी कमला नेहरू और सुपुत्री इन्दिरा के साथ मौजूद रहे। इस अवसर पर 'भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण' के तत्कालीन निदेशक *दयाराम साहनी* के द्वारा तक्षशिला और नागार्जुनकोंडा से प्राप्त बौद्ध-पुरावशेषों को मूलगन्ध कुटी विहार के सुपुर्द किया गया।

धम्मपाल नें भारत में बौद्ध-पुनर्जागरण से सम्बन्धित अपनी गतिविधियों को न सिर्फ उत्तर भारत में बल्कि दक्षिण भारत में भी समान रूप से जारी रखते हुए एक प्रकार से सम्पूर्ण भारत को बौद्ध-धम्म के प्रति जागरूक करने, जनमानस के बीच बौद्ध-चेतना का संचार करने

---

[11] Ibid (pp. 58-59).

[12] Murthy, R., & Nagarajan, M. (Eds.). (1998). *Buddhism in Tamilanadu: Collected Papers* (p. 530). Chennai: Institute of Asian Studies.

[13] Lahiri, N., & Singh, U. (Eds.). (2016). *Buddhism in Asia: Revival and Reinvention* (p. 67). New Delhi: Manoharlal Publishers and Distributors.

[14] Sangharakshita, B., & Kirthisinghe, B. (2011). *Great Sayings of Anagarika Dharmapala* (BPS Online Edition ©2011 ed.) (p. 3). Sri Lanka: Buddhist Publication Society. Retrieved March 16, 2019, from what-buddha-said.net.

तथा भारतीयों को अपनी प्राचीन विरासत को पहचानने एवं उन्हें संजोने हेतु पुनर्जागरण आन्दोलन से जोड़ने का अभूतपूर्व कार्य किया। 1884 ई. में धम्मपाल 'थियोसॉफिकल सोसायटी' के संस्थापकों कर्नल ऑलकोट और मैडम बलावत्स्की के साथ सीलोन से मद्रास आए और यहाँ के दलित-वंचित तबके के उत्थान हेतु काम करना शुरू किया।[15] 28 सितम्बर 1899 को महाबोधि-सोसायटी की मद्रास शाखा की स्थापना की गई और उसके बाद धम्मपाल नें बौद्ध-धम्म के प्रचार तथा पुनर्जागरण आन्दोलन को संगठित करने के उद्देश्य से पेरम्बूर में एक छोटे-से विहार का निर्माण भी करवाया।[16] 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में दक्षिण भारत के प्रसिद्ध समाज-सुधारक एवं बौद्ध-विद्वान *पी.एल. नरसु* नें अयोति दास के साथ मिलकर जब 'मद्रास बुद्धिस्ट एसोसिएशन' की स्थापना की तो धम्मपाल जी को उसका संरक्षक बनाया गया।[17] धम्मपाल नें 1907 ई. में नरसु की प्रसिद्ध कृति 'दि एसेंस ऑफ बुद्धिज़्म' के लिए प्रस्तावना भी लिखा।[18] 1956 की दीक्षाभूमि की धर्म-प्रवर्तन की घटना को सामान्यतः भारत के इतिहास में सामूहिक बौद्ध-धर्मान्तरण की प्रथम घटना के रूप में पहचाना जाता है परंतु इस घटना के लगभग अर्द्ध-शताब्दी पूर्व ही अनगारिक धम्मपाल एवं उनकी महाबोधि-सोसायटी से प्रेरित होकर दक्षिण भारत के दलितों नें बड़ी संख्या में बौद्ध-धम्म को अपनाया था। वैसे तो महाबोधि-सोसायटी का जोर धर्मान्तरण की बजाए आम जनमानस में बौद्ध-चेतना को जागृत करने पर ज्यादा था[19] लेकिन 20वीं सदी के शुरुआती दशकों के दौरान महाबोधि-सोसायटी के प्रयासों के फलस्वरूप केरल के दलित 'इझावा' समुदाय के लोगों ने बड़ी संख्या में बौद्ध-धम्म अपनाया और ये बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर

---

[15] Murthy, R., & Nagarajan, M. (Eds.). (1998). *Buddhism in Tamilanadu: Collected Papers* (p. 531). Chennai: Institute of Asian Studies.

[16] Ibid (p. 402).

[17] Narain, A. (Ed.). (2006). *Studies in Pāḷi and Buddhism: A Memorial Volume in Honor of Jagdish Kashyap* (p. 395). Delhi: B. R. Publishing Corporation.

[18] Murthy, R., & Nagarajan, M. (Eds.). (1998). *Buddhism in Tamilanadu: Collected Papers* (p. 534). Chennai: Institute of Asian Studies.

[19] Narain, A. (Ed.). (2006). *Studies in Pāli and Buddhism: A Memorial Volume in Honor of Jagdish Kashyap* (p. 398). Delhi: B. R. Publishing Corporation.

के नेतृत्व में दीक्षाभूमि (नागपुर) में आयोजित 1956 के सामूहिक धर्मान्तरण से लगभग अर्द्ध-शताब्दी पूर्व की घटना है।[20]

अनगारिक धम्मपाल नें बौद्ध-पुनर्जागरण के अपने अभियान का बिगुल 1893 ई. की शिकागो की 'विश्व धर्म संसद' में फूँका।[21] धम्मपाल नें 1893 में शिकागो की विश्व-धर्म-संसद में थेरवादी बौद्ध-धम्म के प्रतिनिधि के रूप में शिरकत किया था। वहाँ उनके द्वारा प्रस्तुत पत्र *The World's Debt to the Buddha* नें विश्व-धर्म-संसद के श्रोताओं पर गहरी छाप छोड़ी। ऐसे समय में, जबकि यह एशिया और यूरोप में थेरवादी बौद्ध-धम्म के लिए पुनर्जागरण का दौर था, धम्मपाल के द्वारा विश्व के इतने बड़े धार्मिक मंच पर बौद्ध-धम्म का पक्ष रखना साथ ही इस युवा धर्म-प्रचारक का अपने विचारों द्वारा धर्म-संसद पर गहरी छाप छोड़ना इस बात की तस्दीक कर चुका था कि सदियों से उपेक्षित थेरवादी बौद्ध-धम्म को उसका मसीहा मिल चुका है। शायद इन्हीं बातों पर गौर करते हुए *भिक्खु संघरक्खित* अनगारिक धम्मपाल की तुलना इसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा-मसीह से करते हैं।[22]

उपसंहार :

अनगारिक धम्मपाल को आधुनिक भारत में बौद्ध-पुनर्जागरण के पुरोधा के रूप में इसलिए भी देखा जाता है क्योंकि वे न सिर्फ एक बौद्ध-विद्वान थे बल्कि बाद में वे बौद्ध-भिक्खु भी हुए जिन्होंने बौद्ध-धम्म के पुनरुत्थान हेतु कई पुस्तकें भी लिखी। उनके द्वारा स्थापित महाबोधि-सोसायटी का बौद्ध-धम्म के पुनर्जागरण में कितना अधिक योगदान रहा है यह तो जगजाहिर है ही। भारत में बौद्ध-धम्म के पुनर्जागरण हेतु अनगारिक धम्मपाल को जब कभी भी और जिस किसी भी प्रकार की भूमिका निभाने का अवसर प्राप्त हुआ उन्होंने सहर्ष एवं पूरे उत्साह और आत्मविश्वास के साथ उसे बखूबी निभाया। यद्यपि अनगारिक धम्मपाल के पूर्ववर्ती पुरातत्वविद जेम्स-प्रिन्सेप एवं अलेक्जेण्डर कनिंघम की गुरु-शिष्य की जोड़ी तथा धम्मपाल के समकालीन

---

[20] Ibid.

[21] Lahiri, N., & Singh, U. (Eds.). (2016). *Buddhism in Asia: Revival and Reinvention* (p. 390). New Delhi: Manoharlal Publishers and Distributors.

[22] Sangharakshita, B., & Kirthisinghe, B. (2011). *Great Sayings of Anagarika Dharmapala* (BPS Online Edition ©2011 ed.) (p. 4). Sri Lanka: Buddhist Publication Society. Retrieved March 16, 2019, from what-buddha-said.net.

बौद्ध-विद्वान 'टी. डब्ल्यू. रिज डेविड्स' के आधुनिक भारत में बौद्ध-पुनर्जागरण में योगदान उल्लेखनीय रहे हैं तथापि बौद्ध-धम्म के पुनर्जागरण के सन्दर्भ में अंग्रेजी भाषा की कहावत 'वन मैन आर्मी' धम्मपाल जी के ऊपर बिल्कुल सटीक बैठती है क्योंकि इस क्षेत्र में उनका योगदान बहुआयामी रहा है। यही कारण है कि आधुनिक भारत में बौद्ध-पुनर्जागरण के क्षेत्र में अनगारिक धम्मपाल के द्वारा किए गए कार्यों एवं गतिविधियों के ऊपर लगातार शोध-अनुसन्धान होते रहे हैं। धम्मपाल जी के द्वारा भारतीय बौद्ध-स्थलों को पुनर्जीवित करने के कार्य का दक्षिण एशिया (विशेषतः भारत) में बौद्ध-धम्म के पुनर्जागरण पर विशेष प्रभाव पड़ा। आधुनिक भारत में बौद्ध-पुनर्जागरण के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदानों के लिए बौद्ध एवं प्रबुद्ध समाज अनगारिक धम्मपाल का सदैव ऋणी रहेगा।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची :

---

1. कश्यप, जगदीश. (सं.). (1956). *महावग्गपालि* (पृ. 6). बिहार: पालि प्रकाशन मण्डल.
2. Morris, R. (Ed.). (1885). *Aṁguttara Nikāya* (Vol. I, pp. 212-213). London: Pāli Text Society.
3. Oldenberg, H. (Ed.). (1879). *The Dīpavaṁsa: An Ancient Buddhist Historical Record* (p. 36). London: Williams and Norgate.
4. Hazra, K. (1998). *The Rise and Decline of Buddhism in India* (p. 399). New Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd.
5. सांकृत्यायन, रा. (1963). *पालि साहित्य का इतिहास (बौद्ध-साहित्य को राहुल जी की देन, कमला सांकृत्यायन)* (p. 1). लखनऊ: हिंदी समिति (सूचना विभाग).
6. Murthy, R., & Nagarajan, M. (Eds.). (1998). *Buddhism in Tamilanadu: Collected Papers* (p. 401). Chennai: Institute of Asian Studies.
7. Sangharakshita, B., & Kirthisinghe, B. (2011). *Great Sayings of Anagarika Dharmapala* (BPS Online Edition ©2011 ed.) (p. 3). Sri Lanka: Buddhist Publication Society. Retrieved March 16, 2019, from what-buddha-said.net.
8. Lahiri, N., & Singh, U. (Eds.). (2016). *Buddhism in Asia: Revival and Reinvention* (p. 391). New Delhi: Manoharlal Publishers and Distributors.
9. Narain, A. (Ed.). (2006). *Studies in Pāḷi and Buddhism: A Memorial Volume in Honor of Jagdish Kashyap* (p. 395). Delhi: B. R. Publishing Corporation.